Page 1

BA III

Paper III

Social Psychology

Topic – Meaning and Nature of leadership

किसी समूह का नेता वही होता है जिसका उस समूह के सदस्य अनुसरण (follow) करते हैं। नेतृत्व की परिभाषा भिन्न-भिन्न वैज्ञानिकों द्वारा भिन्न-भिन्न तरीके से दिया गया है जो निम्नलिखित है

लिण्ड्ग्रेन (Lindgren, 1973) समूह के एक सदस्य को नेता कहा जाता है जो अपनी पसंद के अनुसार अन्य सदस्यों को व्यवहार करने के लिए अधिक प्रभाव डालता है।

लापीयर तथा फ्रान्सवर्थ के अनुसार नेतृत्व वह व्यवहार है जो अन्य व्यक्तियों के व्यवहार को उससे कहीं अधिक प्रभावित करता है जितना कि उन सभी व्यक्तियों का व्यवहार नेता को प्रभावित करता है।

बास (Bass, 1990) ने नेतृत्व को काफी विस्तृत एवं वैज्ञानिक ढंग से परिभाषित करते हुए कहा है कि नेतृत्व एक ऐसे समूह के बीच अंतःक्रिया है जिसमें सदस्यों की प्रत्याशाओं एवं प्रत्यक्षणों तथा परिस्थितियाँ प्रायः संरचित एवं पुनर्संरचित होती रहती है। नेतृत्व की उत्पत्ति तब होती है जब समूह का एक सदस्य अन्य सदस्यों की सामर्थ्यता तथा अभिप्रेरणा को परिवर्तित करता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं में काफी समानता है क्योंकि मनोवैज्ञानिकों द्वारा समूह के अन्य सदस्यों पर दिये जाने वाले प्रभाव के रूप में परिभाषित किया है उपर्युक्त परिभाषाओं के विश्लेषण से नेतृत्व की एक महत्वपूर्ण विशेषता पर रोशनी पड़ती है और वह यह है कि नेतृत्व में दो पक्ष होते हैं एक नेता जो नेतृत्व करता है दूसरा जो नेतृत्व को स्वीकार करता है। इस प्रक्रिया में ये दोनों पक्ष एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। नेता अनुयायी को अनुयायी एक दूसरे को प्रभावित करते हैं। अर्थात नेता तथा अनुयायियों के बीच एक तरफा सम्बन्ध न होकर दो तरफा सम्बन्ध होता है और इन दोनों के बीच पारस्परिक प्रभाव की मात्रा में अंतर होता है। कभी कभी नेता पूर्ण या निरंकुश प्रभुत्व के लिए प्रयास करता है ताकि वह अपने अनुयायियों को तो प्रभावित कर सके परंतु स्वयं अनुयायियों के व्यवहारों द्वारा बिल्कुल प्रभावित न हो। ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति अधिक समय तक नेता के पद पर नहीं रह सकता है तथा उसका नेतृत्व जल्दी ही समाप्त हो जाता है अतः यह आवश्यक है कि नेता अपने अनुयायियों की प्रतिक्रियाओं को सुनें तथा एक सीमा तक व्यवहार करने की कोशिश करें। अतः नेतृत्व की प्रभावशीलता इस तथ्य पर आधारित होती है कि अनुयायियों द्वारा नेता को अपना ही समझा जाय।

गिब (Gibb 1969) ने अपना मत व्यक्त करते हुए कहा है कि नेता को अपने अनुयायियों द्वारा स्वतः ही प्रभाव दिखलाने का अधिकार मिल जाता है जबकि एक औपचारिक अध्यक्ष को दूसरे पर प्रभाव दिखलाने का अधिकार स्वतः न होकर अपने औपचारिक पद के कारण होता है। कभी-कभी यह स्थिति काफी कठिन हो जाता है कि समूह या संगठन के अन्य सदस्य एक अध्यक्ष नेता समझकर उनका अनुकरण करते हैं या उनके पद की मर्यादा को ध्यान में रखकर वैसा करते हैं।

अतः निष्कर्ष यह है कि नेतृत्व एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें अन्तर्वैयक्तिक अंतःक्रिया होती है क्योंकि नेता अपने अनुयायियों पर प्रभाव डालता है तथा अनुयायी अपने नेता पर प्रभाव डालते हैं अंतर सिर्फ इतना होता है कि नेता का प्रभाव अनुयायी के प्रभाव से अधिक होता है। अतः इन दोनों के बीच पारस्परिक प्रभाव की मात्रा में अंतर होता है। नेता अपने इस तरह के प्रभाव के कारण औपचारिक अध्यक्ष से भिन्न होता है।

Kumar Patil
Maharaja College, Ara